कोलम्बो योजना के अन्तर्गत १९५६ में ब्रिटेन से एक भारी इंजीनियरिंग मिशन, भारत में भारी मशीनें बनाने की संभावनाएं दे ने के लिये, भारत आया था ।

भाग (३) के बारे में स्थिति यह है कि कनाडा ने भारत को, अलूमीनियम कोर्ड स्टील रीइन्फोर्स्ड, पूर्णतः अलूमं नियम के और पूर्णतः तांबे के कंडक्टर और केवल बनाने के लिये तांबा और अलूमीनियम; और साइकिलें बनाने में प्रयोग करने के लिये निकिल दिया है । इस सारी सहायता का मूल्य ५·७५ करोड़ रु० के आस पास है ।

(ख) इन पदार्थों में से कितना आयात हो चुका है, इसकी जानकारी तत्काल उपलब्ध नहीं है क्योंकि आयात गैर सरकारी जरियों से होता है । व्यौरेवार जानकारी इकट्ठी की जा रही है और आ जाने पर सभा की मेज पर रख दी जाएगी ।

रेशम उद्योग

२९२३. श्री म० ला० द्विवेदी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) रेशम उद्योग में काम में आने वाले बढ़िया किस्म के कास्टिक सोडे का उत्पादन करने के लिये क्या योजनायें हैं;

(ख) इस समय इस किस्म का कितना कास्टिक सोडा प्रयुक्त होता है ;

(ग) यह कास्टिक सोडा किन देशों से कितना कितना मंगाया जाता है ; और

(घ) इसके लिये कितनी विदेशी मुद्रा दी जाती है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : (क) अभी एक ही फर्म उत्पादन कर रही है हालांकि ९ अन्य योजनाओं के लिए लाइसेंस दिये जा चुके हैं । एक विवरण जिस में इसके कारखानों के नाम दिये गये हैं लोक सभा पटल पर रख दिया गया है [देखिये परिशिष्ट ५, अनुबन्ध संख्या ५४]

(ख) चालू वर्ष में खपत २३,००० टन से बढ़कर ३०,००० टन हो जाने की संभावना है ।

(ग) और (घ) : रेयन उद्योग में काम आने वाले कास्टिक सोडे के आयात सम्बन्धी आंकड़े आयात व्यापार के आंकड़ों में अलग से नहीं दिखाये जाते । लेकिन अनुमान है कि इस किस्म का २०,००० टन कास्टिक सोडा जिसका मूल्य १२० लाख रु० है, प्रति वर्ष आयात किया जाता है और आम तौर पर ब्रिटेन तथा सं० रा० अमेरिका से आता है ।

सूती वस्त्रों की मिलें

२९२४. श्री म० ला० द्विवेदी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार वर्त्तमान करघों और तकुओं में ही अधिक कपड़े के उत्पादन के लिये कपड़ा मिलों को प्रोत्साहित कर रही है ; और

(ख) यदि हां, तो इसका क्या परिणाम हुआ है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) (क) जी, हां ।

(ख) १९५७ में सूती कपड़ा बनाने वाले मिलों ने ५३१·७ करोड़ गज कपड़ा तैयार किया जबकि १९५६ में ५३०·६ करोड़ गज और १९५५ में ५०९·४ करोड़ गज कपड़ा तैयार किया था ।